ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 279-282
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

उत्तर प्रदेश में मुस्लिम स्थापत्य कला का विकास

1. ईशा
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-18.12.2023, Revised-24.12.2023, Accepted-29.12.2023 E-mail: raniisha206@gmail.com

सारांशः ***भारत देश के उत्तर प्रदेश राज्य में मुस्लिमों के आगमन ने स्थापत्य कला को एक नया आयाम प्रदान किया। स्थापत्य कला को सभी कालों व धर्मों में बढ़ावा मिला। यह कला प्राचीन काल से अस्तित्व में रही एवं इसका विकास अत्यन्त प्राचीन है। लेकिन यदि हम मुस्लिम स्थापत्यों की बात करें तो हमें ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम उत्तर प्रदेश में मुस्लिम कालीन स्थापत्यों का निर्माण कराया गया। जिसमें से कुछ स्थापत्य आज भी एक उत्कृष्ट धरोहरों के रूप में चिन्हित हैं। इन स्थापत्यों में मस्जिद, मीनार, मेहराब और मकबरा आदि अपनी एक अलग पहचान लिये है। जिन कारण इनको एक उत्तम स्मारकों के रूप में माना जाता है। मुस्लिम काल में मुस्लिम स्थापत्यों को बढ़ावा मिला। यह स्थापत्य लाल बुलआ पत्थर व संगमरमर से निर्मित किये गये। कई स्थानों पर इन इमारतों में नक्काशी कार्य तथा कुरान की आयतें भी देखने को मिलती है जो इन स्थापत्यों की शोभा है।***

कुंजीभूत शब्द– उत्तर प्रदेश, स्थापत्य कला, उपलब्धि, प्राचीन विरासतें, आगमन, अस्तित्व, मुस्लिम स्थापत्य कला, कलात्मक स्थापत्य।

उत्तर प्रदेश जनसंख्या के आधार पर भारत का सबसे बड़ा राज्य और क्षेत्रफल की दृष्टि से चौथा सबसे बड़ा राज्य है। यहां पर अनेक कलाओं का समावेश है। जिसमें से स्थापत्य कला को प्रदेश में विशेष महत्व दिया गया। स्थापत्य कला के विकास का इतिहास अति प्राचीन है।

प्रदेश में स्थापत्य कलां के नमूनों का वर्णन पुराणों में स्पष्ट रूप से मिलता है। स्थापत्य कला अर्थात भवन निर्माण की कला उत्तर प्रदेश में प्राचीन काल से ही भवन निर्माण या स्थापत्य कला पर बल दिया गया तथा कला स्मारकों का निर्माण किया गया। यहां पर कई जगह हैं जहां पर स्थापत्य कला को बनाया गया है, जिस कारण यह प्रदेश एक ख्याति प्राप्त प्रदेश कहलाता है। यहां अलग–अलग कालों में अलग–अलग मन्दिरों व मस्जिदों आदि का निर्माण हुआ जो स्थापत्य कलाओं के उत्कृष्ट नमूनों में से एक है। प्रदेश में यदि मुस्लिम स्थापत्य की बात की जाये, तो मुगल कालीन स्थापत्य के उत्कृष्ट नमूने सामने आते हैं। 1526 ई0 में बाबर ने इब्राहिम लोदी, (जो कि दिल्ली सल्तनत के राजा थे, तथा अफगानी थे) को युद्ध में पराजित करके मुगल वंश की नींव डाली थी। बाबर के काल से ही मुस्लिम (मुगल) स्थापत्य कला का जन्म माना जाता है। इसलिए इसको "द्वितीय क्लासिकल युग" भी कहा जाता है। यहां पर अनेक प्रकार के भवनों का निर्माण अधिक पैमाने पर किया गया। भवनों को धार्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष दोनों प्रायोजन हेतु बनाये गये। ज्यादातर लाल बलुआ पत्थर तथा संगमरमर का प्रयोग किया गया। मुगल/मुस्लिम कालीन स्थापत्य कला को निम्न भागों में बांटकर हम स्थापत्य कला के विकास की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

बाबर (1526–1530)– बाबर स्थापत्य कला प्रेमी थे। इनको गैर धार्मिक भवनों के निर्माण में अधिक रूचि थी। बाबर ने ईरानी शैली पर आधारित बगीचे लगवाये आराम बाग और मंडप बनवाये बाबर ने पानीपत की काबुली बाग मस्जिद का निर्माण ईटों से करवाया इसके साथ ही कटे सिरों वाली मीनार फतेहपुर सीकरी अयोध्या की बाबरी मस्जिद उत्तर प्रदेश का निर्माण भी बाबर ने ही करवाया था।

हुमायूँ– (1530–40&1555–56)– हुमायूँ ने अपने शासन काल में उत्तर प्रदेश में कम ही स्थापत्यों का निर्माण कराया, क्योंकि हुमायूँ की रूचि चित्रकला में अधिक थी। लेकिन शासन काल के दौरान इन्होंने उत्तर प्रदेश में हुमायूँ मस्जिद आगरा का निर्माण करवाया था।

अकबर (1556–1605)– अकबर अत्यन्त कला प्रेमी शासक था। मुगल काल में बहुत सुन्दर एवं कलात्मक स्थापत्य का निर्माण करवाया जो लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है।

आगरा से 23 मील दूर फतेहपुर सीकरी का निर्माण कराया और साथ ही इन्होंने वहां भवन, मस्जिद, पाठशाला, तालाब, पुस्तकालय आदि की भी सुविधाये प्रदान की। इसके साथ आगरे का लालकिला (आगरा), पंचमहल (फतेहपुर सीकरी), लाहौर का किला (लाहौर), इलाहाबाद का किला (इलाहाबाद), शेख– सलीम चिश्ती का मकबरा (फतेहपुर सीकरी) बीरबल महल (फतेहपुर सीकरी) आदि का निर्माण भी करवाया था।

जहाँगीर (1605–1627)– जहाँगरी ने कला के साथ–साथ स्थापत्य में भी विशेष योगदान दिया, जो मुस्लिम स्थापत्य को बढ़ावा देते हैं। अकबर के काल तक स्थापत्यों का निर्माण लाल बलुआ पत्थर से किया जाता था, लेकिन जहाँगीर के काल में लाल बलुआ पत्थर के साथ–साथ संगमरमर का भी प्रयोग होने लगा था, जो स्थापत्य कला के विकास को बढावा देता है। यदि उत्तर प्रदेश की बात की जाये तो जहाँगीर ने जोधाबाई का मकबरा (सिकन्दराबाद), अकबर का मकबरा (आगरा) आदि का निर्माण करवाया।

शाहजहाँ (1627–1658)– शाहजहाँ को अत्यन्त कलाध्स्थापत्य कला प्रेमी माना जाता है, क्योंकि इनके काल में स्थापत्य कला सम्बन्धी अनेकों महत्वपूर्ण स्थापत्य बनवाये गये। शाहजहाँ काल में संगमरमर के पत्थर का प्रयोग किया गया जिससे इनके काल को संगमरमर काल के नाम से भी पुकारा जाता है। स्थापत्य कला सम्बन्धी उत्कृष्ट कार्य होने के कारण इनके काल को स्थापत्य कला का स्वर्ण काल कहा जाता है। उत्तर प्रदेश में शाहजहाँ ने ताजमहल (आगरा), मोती मस्जिद (आगरा) मुसम्मन बुर्ज (आगरा) बनवाया था।

औरंगजेब (1658–1707)– औरंगजेब अत्यन्त क्रूर शासक था तथा एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। इनके काल को मुगल सैली के पतन का काल कहा जाता है। औरंगजेब ने स्थापत्यों का निर्माण तो कराया। लेकिन उत्तर प्रदेश में इनका स्थापत्य इनका कला में कोई योगदान नहीं था, क्योंकि इनके स्वभाव में नीरसता थी, जिससे इनकी रूचि स्थापत्य कला में अधिक नहीं थी। स्थापत्य

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

कला से प्रेम न होने के कारण उन्होंने प्राचीन स्थापत्यों को भी तुडवा दिया था। औरंगजेब के बाद बहादुर शाह गद्दी पर बैठे। यह उर्दु के कवि के रूप में प्रसिद्ध थे लेकिन स्थापत्य कला सम्बन्धी कार्य इनके काल में नहीं हुआ।

विश्व धरोहर सूची में शामिल मुस्लिम स्थापत्य– उत्तर प्रदेश में लगातार स्थापत्य सम्बन्धी विकास होने के कारण कुछ मुस्लिम स्थापत्यों को विश्व धरोहर सूची में भी शामिल किया गया। जिनका विवरण कुछ इस प्रकार है :

आगरा किला– आगरा किला को लाल किला, फोर्ट– रूज, किला–ए–अकबरी के नाम से भी जाना जाता था। यह एक ऐतिहासिक किला है, जो भारत, उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित है। इसका निर्माण मुगल सम्राट अकबर ने 1565–1573 के बीच करवाया था। यह ताजमहल से लगभग 2.5 किमी की दुरी पर उत्तर पश्चम में स्थित है।

यह किला लाल बलुआ पत्थर से बना हुआ है, तथा मुस्लिम (मुगल) स्मारकों का सर्वोकृष्ट उदाहरण है। यूनेस्को ने मुस्लिम (मुगल आगरा के किले को 1983 ई0 में विश्व धरोहर सूची में शामिल किया था।

फतेहपुर सीकरी– फतेहपुर सीकरी की स्थापना 1959 ई0 में मुगल सम्राट अकबर द्वारा में की गई थी और यह स्थल वर्तमान, यह आगरा जिले का एक नगर–पालिका बोर्ड है। फतेहपुर सीकरी मुस्लिम स्थापत्य का सबसे अच्छा उदाहरण है। फतेहपुर सिकरी के अन्दर बनी कुछ मुख्य इमारतें –

बुलन्द दरवाजा– यहाँ पर बुलन्द दरवाजा दर्शनीय स्मारक है बुलन्द शब्द का अर्थ महान या ऊँचा है। अपने नाम को सार्थक करने वाला यह स्मारक विश्व का सबसे बडा प्रवेश द्वार है।

इसका निर्माण अकबर ने 'गुजरात विजय स्मारक' के रूप में करवाया था। यह इमारत लाल व भूरे पत्थर से निर्मित है इस दरवाजे की कुल ऊँचाई है, जो 176 फीट ऊँचे एक चबुतरे पर स्थित है। अपनी विशेषताओं के आधार पर ही फतेहपुर सीकरी को विश्व धरोहर अपना सूची में 1986 ई0 में शामिल किया गया था।

पंचमहल– यह एक पाँच मंजिला बनी इमारत है। इस महल की सबसे मुख्य विशेषता इसमें दीवारों का न होना है। पंचमहल इमारत का उपयोग शाही हरम में रहने वाली महलाओं के विलास और मनोरंजन के लिए किया जाता था।

इसमें 176 खम्भे हैं जिसके सहारे यह इमारत खडी है और हर खम्भे पर अलग ही प्रकार की कलाकृति देखने को मिलती है।

शेख सलीम चिश्ती की दरगाह– बुलन्द दरवाजे से कुछ ही दूरी पर अन्दर की ओर सम्राट अकबर के गुरू शेख सलीम चिश्ती की दरगाह दिखाई देती है। यह दरगाह सफेद संगमरमर से बनी है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

इसका निर्माण 1581ई0 में पूरा हुआ तथा इस दरगाह की ऐसी मान्यता है कि यहाँ पर देश–विदेश से कई श्रद्धालू लोग आकर यहाँ की नक्काशीदार खिडकियों में लाल सभी धर्मों के श्रद्धालु लोग आकर यहाँ की नक्काशीदार खिडकियों में लाल धागे बांधकर मन्नत मांगते हैं। इस दरगाह को पहले अकबर ने तथा बाद में जहाँगीर ने संगमरमर में करवाया था।

जोधाबाई का महल– फतेहपुर सीकरी में स्थित सभी महलों में सबसे बड़ा महल जोधाबाई महल है। इसका निर्माण अकबर ने करवाया था तथा इस इमारत का नाम अपनी बेगम के नाम पर रखा था।

इसमें मुस्लिमों की शिल्पकला का सुन्दर संयोजन देखने को मिलता है तथा यह महल दो मंजिला इमारत है, और इसका मुख्य दरवाजा दक्षिण की तरफ है, जोधाबाई के महल के समीप ही मरियम की कोठी एक छोटी इमारत है।

बीरबल का महल– बीरबल के महल का निर्माण अकबर ने करवाया था। यह इमारत जोधाबाई महल के उत्तर पश्चिम कोने में स्थित है।

फतेहपुर अलकृत सीकरी में स्थित सभी इमारतों में सर्वाधिक अलंकृत इमारत मानी जाती है। इस इमारत की वास्तुकला विशिष्ट मुगल शैली पर आधारित है। इस इमारत के भीतरी भाग को तीन भागों में बांट दिया गया है, जिसमें प्रथम इमारत मंजिल पर सुन्दर झरोखे हैं तथा नीचे एक साधारण उभरे हुए छज्जे के साथ दरवाजा दिखाई देता है।

तुर्की सुल्तान का महल– इस स्थापत्य को कला का मोती भी कहा जाता है। इसका निर्माण सम्राट अकबर ने करवाया था। यहाँ पर एक ऊँचा प्रवेश द्वार, एक विशाल मस्जिद, स्तम्भों वाले महल आदि भी बने हैं। यह भी फतेहपुर सीकरी की अलंकृत इमारतों में से एक है।

ऐसी मान्यता है कि यह घर अकबर की पंसदीदा रानी का निवास स्थान है। जिसका नाम तुर्की सुल्ताना था। यह इमारत सम्भवतः राजा के निजी महलों में से एक थी। इसके बाहरी और आन्तरिक भागों में लाल बलुआ पत्थर में ज्यामितीय और पुष्प डिजाइनों की सजावटी देखने को मिलते हैं, जो लकड़ी जैसा सा आभास देती है।

ताज महल– शाहजहाँ द्वारा निर्मित 1632 ई0 में विश्व के सर्वोत्कृष्ट स्थापत्यों में से एक ताजमहल आगरा में स्थित है। शाहजहाँ ने इसका निर्माण अपनी पत्नी अर्जुमन्द बानो बेगम (मुमताज) की याद में करवाया था।

यह मकबरा एक वर्गाकार इमारत है, जो श्वेत संगमरमर से खुबसूरत नक्काशी युक्ता तथा रंगीन रत्नों का जडाऊ कार्य भी किया गया है। ताजमहल का निर्माण 22 फिट ऊँचे चबुतरे पर किया गया है तथा इसके अग्रभूमि में चार बाग व्यवस्था है। यह मकबरा यमुना के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। ताजमहल के चबुतरे के चारों कोनों पर चार मीनारें बनाई गई है। जिसमें प्रत्येक इमारत की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

लम्बाई 137 फीट है। तथा ताजमहल के केन्द्रीय गुम्बद के शीर्ष की ऊँचाई 187 फीट है। ताजमहल पर कुरान की आयतों की कैलीग्राफी अमानत खान सीराजी द्वारा की गयी। यूनेस्को ने ताजमहल को 1983 ई0 में विश्व धरोहर सूची में शामिल किया था।

निष्कर्षः– उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि उत्तर प्रदेश में स्थापत्य कला अत्याधिक रूप से दिखने को मिलती है। जिनमें से कुछ स्थापत्य के नमुनों को विश्व धरोहर सूची में शामिल भी किया गया, जो कि उत्तर प्रदेश के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। यहाँ की धरोहरें ऐसे ही सदा कायम रहे, तॉकि विदेश के प्रत्येक हिस्से की यह मिसाल बनी रहे। इसलिए सरकार ने इनके संरक्षण के लिए कदम भी उठाये, जिससे हमारी विरासत सुरक्षित रहे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. किरण, प्रदीप, भारतीय कला, कृष्णा प्रकाशन मीडिया प्रा0 लि0
2. भारती, डा0 मिनाक्षी कासलीवाल, भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्य कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. प्रताप, डा0 रीता, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. www.gyanodaya india.com
5. www.samantagyan.com
6. चित्र– Google search engine.

*****